विविध पारिस्थितिकियों के लिए सीआरआरआई की धान किस्में

एस.के. दास, एस.के. प्रधान, एम.के. कर, एस.एस.सी. पटनायक, एल. बेहेरा, जे. मेहेर, आनंदन.ए, बी.सी. मरांडी, एस. लेंका, के. चट्टोपाध्याय, ओ.एन. सिंह एवं टी. महापात्र

विविध पारिस्थितिकियों के लिए सीआरआरआई की धान किस्में

सीआरआरआई तकनीकी पत्रक - १०७

सर्वाधिकार सुरक्षित : आईसीएआर-सीआरआरआई, मार्च-२०१५

संपादन एवं अभिन्यास : बी. एन. सङ्गी, जी. ए. के. कुमार, संध्या रानी दलाल
अनुवाद : विभु कल्याण महांती, हिंदी संपादन : एस. जी. शर्मा, जी. ए. के. कुमार
फोटोग्राफी : प्रकाश कर, भगवान बेहेरा

टाइप सेट : आईसीएआर-केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान,
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं मुद्रण : प्रिंटटेक ऑफसेट, भुवनेश्वर,
प्रकाशक : निदेशक, केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक (उड़ीसा) ७५३००६

नुआ कालाजीरा (आईईटी १८३९३): यह विलंब अवधि में (१४५ दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई की (१४० सेंटीमीटर) प्रकाशसंवेदनशील धान किस्म है जिसे ओडिशा के निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष २००८ में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। इसके दाने का छिलका काले रंग का है, दाना छोटा-मोटा एवं सुगंधित (गैर बासमती) किस्म का है। औसत उपज क्षमता ३.० टन प्रति हैक्टर है। यह धान टुंग्रो रोग प्रतिरोधी है, पत्ता प्रध्वंस तथा आच्छद विगलन के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। कम दूरी पर रोपाई के लिए तथा जैविक खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

नुआ धूसरा (आईईटी १८३९५): यह विलंब अवधि में (१४५ दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई की (१४२ सेंटीमीटर) प्रकाशसंवेदनशील लोकप्रिय धान किस्म है जिसे ओडिशा के निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष २००८ में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा मोटा है एवं औसत उपज क्षमता ३.० टन प्रति हैक्टर है। यह आच्छद विगलन, गला प्रध्वंस तथा धान टुंग्रो रोग प्रतिरोधी है एवं गालमिज के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। यह किस्म ३-४ दिन की छोटी अवधि के लिए जलनिमग्नता सह सकता है।

गीतांजलि (सीआरएम २००७-१): यह मध्यम अवधि में (१३० दिन) पकने वाली, सुगंधित धान की किस्म है। इसकी ऊंचाई ११५ सेंटीमीटर है जिसे ओडिशा के सिंचित क्षेत्रों एवं मध्यम भूमि में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २००५ में विमोचित एवं २००६ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं औसत उत्पादकता ४.० - ४.५ टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह गला प्रध्वंस प्रतिरोधी है तथा भूरा पौध माहू एवं गालमिज के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। कल्ले निकलने की अवस्था में २० सेंटीमीटर तक अतिरिक्त जल स्थिति को सहन कर सकता है।

विविध पारिस्थितिकियों के लिए सीआरआरआई की धान किस्में

विविध पारिस्थितिकी एवं जलीय दशांओं के अंतर्गत जलप्लावित, कम एवं अच्छी जल निकास वाली भूमियों से लेकर सिंचित एवं वर्षाश्रित उपरी भूमियों में धान की खेती की जाती है। भारत में विभिन्न पारिस्थितिकियों में धान की खेती के लिए कुल १०२० किस्में विमोचित की जा चुकी हैं। (चावल अनुसंधान निदेयशालय, हैदराबाद, तकनीकी बुलेटिन संख्या-८३/२०१४)। इनमें से सीआरआरआई ने ११४ किस्में विकसित की हैं। एक विशेष पारिसिथतिकी में, अधिक उत्पादन की प्राप्ति के लिए उचित धान की किस्म का चयन बहुत महत्वपूर्ण है। विभिन्न प्रकार की पारिस्थितिक-भौगोलिक परिस्थितियों के प्रति अनुकूल इन किस्में से अधिक उपज की प्राप्ति के लिए समूचित जल आपूर्ति, पोषकतत्व, प्राकश, स्थान तथा तापमान बुनियादी रूप से आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त, किसी भी किस्म की उपज उसकी बुआई/ रोपाई और कटाई के इष्टतम समय पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में, किसी भी किस्म की अधिक उपज प्राप्त करने हेतु उसकी विशेषताओं एवं गुण विशेष के बारे में ज्ञान आवश्यक है। सीआरआरआई द्वारा विकसित विविध पारिस्थितिकियों के लिए उपयुक्त लोकप्रिय किस्में जिन्हें पूर्व में विमोचित किया जा चुका है एवं जो किसान समुदाय में लोकप्रिया हो चुकी हैं, के बारे में संक्षेप में इस पुस्तिका में वर्णन किया गया है। हाल ही में विमोचित उन्नतशील किस्में को भी किसानों के लाभ के लिए शामिल किया गया है।

ऊपरीभूमि पारिस्थितिकी

बिन-मेंड वाली ऊपरीभूमि

अंजली (आरआर ३४७-१६६): यह अति शीघ्र पकने (९० दिन) वाली किस्म है जिसे वर्ष २००२ में बिहार, झारखंड, ओडिशा, असम एवं त्रिपूरा के ऊपरीभूमि पारिस्थितिकी में खेती के लिए विमोचित तथा अधिसुचित किया गया है। इस किसम की ऊंचाई मध्यम (८५-१०० सेंटीमीटर) है। यह सूखा सहिष्णु है तथा सीधी बुआई परिस्थिति के लिए उपयुक्त है। इस किस्म का दाना भरण गुण बहुत अच्छा है। इसके दाने छोटे एवं मोटे हैं तथा खाना पकाने का गुणवत्ता अच्छी है। यह किस्म भूरा धब्बा एवं गालमिज रोग प्रतिरोधी है। पत्ता प्रध्वंस, आच्छद विगलन, तना छेदक तथा सफेदपीठवाला पौध माहू के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। इसकी औसत उत्पादकता ३.०-४.०० टन प्रति हेक्टर है।

वंदना (आरआर १६७-९८२): यह अति शीघ्र पकने (९०-९५ दिन) वाली धान किस्म है जिसे सर्वप्रथम वर्ष १९९२ में झारखंड के छोटानागपुर पठार के लिए विमोचित किया गया। ओडिशा के ऊपरिभूमियों में खेती के लिए उस किस्म को वर्ष २००२ में विमोचित तथा अधिसूचित किया गया। इसकी ऊंचाई कम (९५-११० सेंटीमीटर) है। यह किस्म सूखा एवं मृदा अम्लीयता के प्रति सहिष्णु है। इसका दाना लंबा एवं मोटा है। वंदना मध्यम रूप से प्रध्वंस एवं भूरा धब्बा रोग प्रतिरोधी है। इसकी औसत उत्पादकता ३.५ टन प्रति हेक्टेयर है।

हीरा (सीआरआर ५४४-१-२): यह अति शीघ्र पकने (७०-७५ दिन) वाली धान किस्म है। इसे ओडिशा के लिए वर्ष १९८८ में विमोचित तथा १९८९ में अधिसूचित किया गया। यह अर्ध-बौन (७५-८५ सेंटीमीटर) किस्म वर्षाश्रित ऊपरीभूमियों के लिए उपयोगी है। शीघ्र पकने के कारण बाढ़ के बाद क्षति की भरपाई के लिए उपयुक्त है। इसका दाना लंबा एवं मोटा है। यह किस्म प्रध्वंस एवं गालमिज सहिष्णु है। इस किस्म में प्रोटीन की मात्रा ज्यादा पाई जाती है (लगभग १२ प्रतिशत) जिसके कारण यह न्यूट्री-फार्मिंग के लिए उपयुक्त है। देश के चावल खाने वालों में प्रोटीन की कुपोषण की समस्या को दूर करने में यह किस्म सहायक होगी। इस किस्म की औसत उत्पादकता ३.० से ४.० टन प्रति हैक्टर के बीच है।

सुगंधित चावल

सीआर सुगंध धान ९०७ (सीआर २६१६-३-३-१): यह विलंब अवधि में (१५० दिन) पकने वाली, सुगंधित गैर बासमती धान किस्म है जिसे ओडिशा, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश तथा गुजराज के सिंचित परिस्थिति में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१२ में विमोचित तथा वर्ष २०१३ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ४.५ - ५.० टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह गला प्रध्वंस, गाल मिज प्रतिरोधी है तथा आच्छद विगलन एवं पीला तना छेदक के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर सुगंध धान ९०२ (पूर्णभोग) (सीआरएम २२०३-४): यह विलंब अवधि में (१४०-१४५ दिन) पकने वाली, बौनी ऊंचाई वाली तथा सुगंधित गैर बासमती धान किस्म है जिसे ओडिशा के सिंचित एवं उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष २०१२ में विमोचित में किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं औसत उजन क्षमता ४.५ - ५.० टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह गला प्रध्वंस, काल मिज प्रतिरोधी है तथा आच्छद विगलन एवं पीला तना छेदक के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

नुआ चिनीकामिनी (आईईटी १८३९४): यह विलंब अवधि में (१४५-१५० दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई की (१४० सेंटीमीटर) प्रकाशसंवेदनशील सुगंधित गैर बासमती धान किस्म है जिसे ओडिशा के निचलीभूमि क्षेत्रों तथा वर्षाश्रित निचलीभूमियों में खेती के लिए वर्ष २०१० में विमोचित एवं २०११ में अधिसुचित किया गया है। इसका दाना छोटा-मोटा है एवं औसत उपज क्षमता ३.५ टन प्रति हैक्टर है। यह आच्छद विगलन, गला प्रध्वंस तथा धान टुंग्रो रोग एवं गालमिज प्रतिरोधी है तथा तना छेदक के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। कम दूरी पर रोपाई के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

संकर धान

सीआर धान ७०१ (सीआरएचआर ३२):

यह देश की पहली विलंब अवधि में (१४० दिन) पकने वाली संकर धान किस्म है जिसे बिहार एवं गुजरात के सिंचित तथा उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१० में विमोचित एवं २०१२ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ६.० - ६.५ टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह जल भराव एवं कम प्रकाश परिस्थिति को सह सकता है। यह किस्म धान टुंग्रो रेग, जीवाणज अंगमारी, हरा पौध माहू एवं पत्ता गला प्रध्वंस के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। दिसंबर में बुआई करने पर शुष्क मौसम में भी इसकी खेती की जा सकती है।

राजलक्ष्मी (सीआरएचआर-५): यह मध्यम अवधि में (१२५-१३५ दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना (१०५-११० सेंटीमीटर) लोकप्रिय संकर किस्म है। उंकुरण अवस्था में शीत सहिष्णु है, सिंचित एवं बोरो पारितंत्र के लिए उपयुक्त है। इसे ओडिशा तथा असम में खेती के लिए वर्ष २००५ में राज्य किस्म विमोचन समिति तथा २०१० में केंद्रीय किस्म विमोचन समिति द्वारा विमोचित एवं २००६ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं औसत उत्पादकता ७.० - ७.५ टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह किस्म तना छेदक, भूरा पौध माहू, सफेदपीठ वाला पौध माहू, गालमिज, पत्ता प्रध्वंस तथा जीवाणुज पत्ता अंगमारी के प्रति सहिष्णु है। यह किस्म कल्ले निकलने की अवस्था में ७-१० दिन की जल भराव स्थिति सहन कर सकता है।

अजय (सीआरएचआर-७): यह मध्यम अवधि में (१२५-१३५ दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना (१०५-११० सेंटीमीटर) किस्म की लोकप्रिय संकर किस्म है। इसे ओडिशा के सिंचित तथा उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २००५ में विमोचित तथा २००६ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं औसत उत्पादकता ७.० - ७.५ टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह प्रध्वंस प्रतिरोधी है तथा धान टुंग्रो वायरस के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है, जीवाणुज अंगमारी, तना छेदक तथा भूरा पौध माहू के विरूद्ध सहिष्णु है। यह किस्म कल्ले निकलने की अवस्था में ७-१० दिन की जल भराव स्थिति सहन कर सकता है।

मेंड वाली ऊपरीभूमि

सीआर धान १०० (सत्यभामा) (सीआर २३४०-११):

यह शीघ्र पकने (१०५-११० दिन) वाली, अर्ध-बौना (९५-१०५ सेंटीमीटर) धान की किस्म है। इसे ओडिशा के सूखा प्रवण क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष २०१२ में विमोचित तथा २०१३ में अधिसूचित किया गया। इसका दाना मध्यम लंबा एवं पतला है। यह किस्म भूसी बदरंगता के प्रति सहिष्णु है। सुखा परिस्थिति में इसकी औसत उत्पादकता २.८ टन प्रति हैक्टर है तथा अनुकूल परिस्थितियों में इससे ४.७ टन प्रति हैक्टर उपज प्राप्त होती है। पत्ता मोड़क, व्होर्ल मैगट, सफेदपीठवाला पौध माहू, भूरा पौध माहू, गालमिज, हिस्पा, थ्रीप्स पत्ता प्रध्वंस तथा धान टुंग्रो वायरस के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सहभागी धान (आईआर ७४३७१-७०-१-१सीआरआर-१): यह शीघ्र पकने (१०० दिन) वाली, बौना (८५-९० सेंटीमीटर) धान की किस्म है। वर्ष २००८ तथा २०११ में क्रमशःझारखंड एवं ओडिशा में खेती के लिए विमोचित तथा अधिसूचित किया गया। यह सूखा सहिष्णु है तथा अनुकूल परिस्थिति में भी अच्छी उपज देती है। ऊपरीभूमि, वर्षाश्रित सीधी बुआई तथा रोपित परिस्थितियों के लिए उपयुक्त किस्म है। इसका दाना लंबा एवं मोटा है तथा इसका ऊपरी छिलका स्वर्णिम रंग का है। इसकी औसत उत्पादकता ३.८ - ४.५ टन प्रति हैक्टर है। आईआर ६४ तथा आईआर ३६ की अपेक्षा सहभागी धान से मध्यम सूखा स्थिति में ०.५ टन प्रति हैक्टर अधिक उपज प्राप्त हुई है। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस प्रतिरोधी है तथा भूरा धब्बा, आच्छद विगलन, तना छेदक एवं पत्ता मोड़क के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान ४० (कामेश) (सीआरआर ३८३-२२):

यह शीघ्र पकने (११० दिन) वाली, अर्ध बौना (१००-१०५ सेंटीमीटर) धान की किस्म है, मेंड वाली ऊपरीभूमियों तथा वर्षाश्रित ऊपरीभूमियों के लिए यह एक लोकप्रिय किस्म है। इसे वर्ष २००८ में झारखंड एवं महाराष्ट्र के सुखा आक्रांत क्षेतों में खेती के लिए विमोचित तथा अधिसूचित किया गया। इसका दाना छोटा एवं मोटा है तथा औसत उत्पादकता ३.० - ३.५ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म भूरा धब्बा, गालमिज प्रध्वंस, सफेदपीठवाला पौध माहू, तना छेदक तथा पत्ता मोड़क के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। वर्षाश्रित ऊपरीभूमियों में सीधी बुआई परिस्थिति के लिए यह उपयुक्त है।

अन्नदा (सीआर २२२-एमडब्ल्यू १०): यह शीघ्र पकने (११० दिन) वाली धान किस्म है। इसे वर्ष १९८७ में ओडिशा के ऊपरीभूमियों में खती के लिए और १९८८ में पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश असम एवं गोवा में खेती के लिए विमोचित तथा अधिसूचित किया गया। यह अर्ध बौना (८५-९० सेंटीमीटर) की किस्म है, गिरती नहीं है तथा मध्यम रूप से सूखा सहिष्णु है। इसका दाना छोटा एवं मोटा है तथा की औसत उत्पादकता ४.० - ५.० टन प्रति हैक्टर है। प्रध्वंस तथा आच्छद अंगमारी के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

ऐरोबिक धान

सीआर धान २०४ (सीआर २७१५-१३-आईआर ८४८९९-बी-१५४): यह मध्यम अवधि की शीघ्र पकने (११० दिन) वाली, अर्ध-बौना एवं न गिरने वाली धान की किस्म है। यह सीमित एवं ऐरोबिक परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। इसे झारखंड तथा तमिलनाडु में खती के लिए क्रमशः वर्ष २०१२ में विमोचित तथा २०१४ में अधिसूचित किया जा युका है। इसका दाना मध्यम पतला है तथा औसत उत्पादकता ३.९ टन प्रति हैक्टर है। प्रत्येक वर्गमीटर में बालियों की संख्या (२८५) अधिक होती हैं। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस, गला प्रध्वंस, भूरा धब्बा, आच्छद विगलन, तना छेदक (डेड हार्ट एवं व्हाइट इयर हेड), पत्ता मोड़क, व्होर्ल मैगट, केस वर्म एवं राइस थ्रीप्स के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान २०२ (सीआर २७१५-१३- आईआर ८४८९९-बी-१५४): यह मध्यम अवधि की शीघ्र पकने (११० दिन) वाली किस्म है। सीमित एवं ऐराबिक परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। इसे ओडिशा तथा झारखंड में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१२ में विमोचित तथा २०१४ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा एवं मोटा है तथा औसत उत्पादकता ३.७ टन प्रति हैक्टर है। प्रत्येक वर्गमीटर में बालियों की संख्या (२८५) अधिक होती हैं। कल्लों की संख्या सामान्य (७-१०) एवं मध्यम वजन सहित धनी बालियां होती हैं। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस, भूरा धब्बा, आच्छद विगलन, तना छेदक (डेड हार्ट एवं व्हाइट इयर हेड), पत्ता मोड़क, व्होर्ल मैगट एवं राइस थ्रीप्स के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान ४०५ लुणा शांखी (सीआर २५७७-१): यह शीघ्र अवधि में (११० दिन) पकने वाली किस्म है जिसे ओडिशा के तटीय लवणता क्षेत्रों के सिंचित परिस्थिति में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१२ में विमोचित एवं २०१३ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ४.६ टन प्रति हैक्टर है। यह प्रध्वंस सहिष्णु है तथा आच्छद अंगमारी के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। लवणी क्षेत्रों में शुष्क मौसम के दौरान खेती के लिए बहुत उपयुक्त है।

सीआर धान ४०३ लुणा सुवर्णा (सीआर २०९६-७१-२): यह विलंब अवधि में (१५० दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई की (१३५ सेंटीमीटर), लवण सहिष्णु (५.० से ८.० डेसी सीमेन्स प्रति मीटर) किस्म है जिसे ओडिशा के तटीय लवणता क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१० में विमोचित एवं २०११ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ३.५ से ४.० टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह किस्म ४५ सेंटीमीटर तक जल भराव स्थिति को सहन कर सकता है। जुलाई माह के १५ तारीख के पहले ४० दिन आयु वाले पौध की शीघ्र रोपाई के लिए इसकी सिफारिश की जाती है। यह प्रध्वंस प्रतिरोधी है, पीला तना छेदक, भूरा पौध माहू तथा मोड़क पत्ता के प्रति सहिष्णु है।

सीआर धान ४०२ लुणा संपद (सीआरएलसी २०९५-१८१-१): यह मध्यम विलंब अवधि में (१४० दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई की (१३० सेंटीमीटर), लवण सहिष्णु (५.० से ८.० डेसी सीमेन्स प्रति मीटर) किस्म है जिसे ओडिशा के तटीय लवणता एवं वर्षाश्रित लवण परिस्थिति वाली क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१० में विमोचित एवं २०११ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम मोटा है एवं औसत उपज क्षमता ३.६ से ४.२ टन प्रति हैक्टर के बीच है। यह प्रध्वंस प्रतिरोधी है, धान टुंग्रो रेग, आच्छद अंगमारी तथा तना छेदक के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

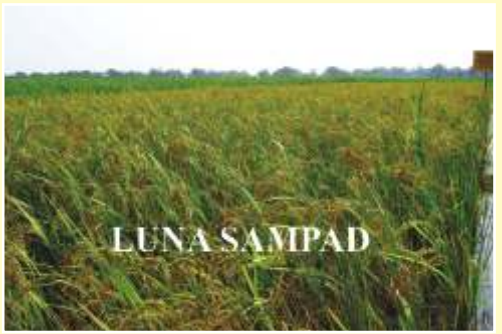

इस किस्म की ५० दिनों की आयु वाली पौध की रोपाई करने पर भी उपज में नुकसान नहीं होता है। यह किस्म ५० सेंटीमीटर तक की जल भराव स्थिति को सहन कर सकता है।

दुर्गा (सीआर ६८३-१२३): यह विलंब अवधि में (१५५ दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई (१२५-१३५ सेंटीमीटर), प्रकाशसंवेदनशील धान किस्म है जिसे ओडिशा के निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष २००० में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ४.५ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणुज पत्ता अंगमारी, आच्छद विगलन तथा भूरा पौध माहू प्रतिरोधी है। इस किस्म में दीर्घीकरण क्षमता है। जैसे ही जल स्तर बढ़ता जाता है, पौधे का तना लंबा होता रहता है जिसके फलस्वरूप यह किस्म १०० सेंटीमीटर तक की जल भराव स्थिति को सहन कर सकता है।

गायत्री (सीआर २१०-१०१८): यह विलंब अवधि में (१६० दिन) पकने वाली, अर्ध लंबी (११० सेंटीमीटर), प्रकाशसंवेदनशील लोकप्रिय धान किस्म है जिसे ओडिशा, पश्चिम बंगाल तथा बिहार के निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष १९८८ में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा मोटा है एवं औसत उपज क्षमता ५.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म प्रमुख रेगों एवं नाशककीटों के विरूद्ध सहिष्णु है। इसके दानों में सुप्तावस्था क्षमता है। यह किस्म ५० सेंटीमीटर तक की जल भराव स्थिति को सहन कर सकता है तथा विलंबित रोपाई के लिए उपयुक्त है।

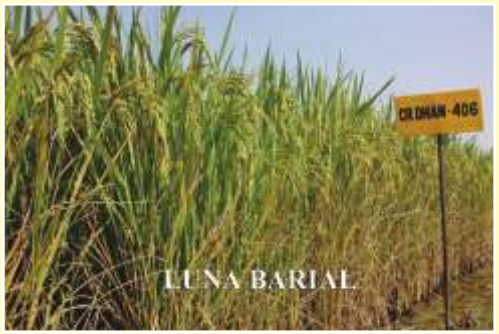

तटीय लवण पारिस्थितिकी सीआर धान ४०६ (लुणा वरियल) (सीआर २०९२-१५८-३): यह विलंब अवधि में (१५०-१५५ दिन) पकने वाली, लवण सहिष्णु (५.० से ८.० डेसी सीमेन्स प्रति मीटर) धान किस्म है जिसे ओडिशा के तटीय लवयाता परिस्थिति वाली क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१२ में विमोचित एवं २०१३ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा एवं मोटा है एवं औसत उपज क्षमता ३.९ टन प्रति हैक्टर है। यह पीला तना छेदक के प्रति सहिष्णु है तथा आच्छद अंगमारी तथा जीवाणुज पत्ता अंगमारी के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान २०१ (सीआर २७२१-८१-३-आईआर ८३३८०-बी-बी-१२४-१): यह मध्यम अवधि की शीघ्र पकने (११०-११५ दिन) वाली, अर्ध-बौना, न गिरने वाली धान किस्म है, सीमित तथा ऐराबिक परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। बिहार तथा छत्तीसगढ़ में खेती के लिए इसे क्रमशः वर्ष २०१२ में विमोचित तथा २०१४ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना दंबा एवं पतला है तथा औसत उत्पादकता ३.८ टन प्रति हैक्टर है। इस किस्म के प्रत्येक वर्गमीटर में बालियों की संख्या (२८०) अधिक होती हैं तथा बालियां लंबी एवं धनी होती हैं। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस, आच्छद विगलन, तना छेदक (डेड हार्ट एवं व्हाइट इयर हेड), पत्ता मोड़क, व्होर्ल मैगट एवं राइस थ्रीप्स के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

प्यारी (सीआर धान २००) (सीआर २६२४-आईआर ५५४२३-०१): यह मध्यम अवधि सकी शीघ्र पकने (११५-१२० दिन) वाली अर्द्ध-बौना धान किस्म है तथा सीमित एवं ऐराबिक परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। ओडिशा में खेती के लिए इसे वर्ष २०१२ में विमोचित तथा २०१३ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा एवं मोटा है तथा औसत उत्पादकता ४.० टन प्रति हैक्टर है। यह पत्ता प्रध्वंस, गला प्रध्वंस, भूरा धब्बा, पीला तनास छेदक तथा तत्ता मोड़क के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सिंचित पारिस्थितिकी

सीआर धान ३०५ (सीआर २७०६): यह मध्यम अवधिं (१२५-१३० दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना, न गिरने वाली धान की किस्म है। इसे झारखंड, महारष्ट्र तथा आंध्र प्रदेश के सिंचित (प्रतिरोपित) मध्यम-अगेती पारिस्थितिकियों कि लिए क्रमशः २०१३ में विमोचित एवं २०१४ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है तथा औसत उत्पादकता ४.८ टन प्रति हैक्टर है। इसकी बालियां लंबी एवं धनी हैं। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस, गला प्रध्वंस, भूरा धब्बा, आच्छेद विगलन, सफेदपीठवाला पौध माहू, पत्ता मोड़क, व्होर्ल मैगट तथा हरा पौध माहू के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान ३०४ (सीआर २६४४-२-६-४-३-२): यह मध्यम अवधि में (१२५-१३० दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना (११० सेंटीमीटर) किस्म की प्रजाति है जो सिंचित पारितंत्र के लिए उपयुक्त है। इसे औडिशा एवं पश्चिम बंगाल के सिंचित खेत्रों में खेती के लिए क्रमशः २०१३ में विमोचित एवं २०१४ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा एवं मोटा है तथा औसत उत्पादकता ५.० - ५.५ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म गाल मिज जैवप्ररूप १ के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान ३०३ (सीआर २६४९-७): यह मध्यम अवधि में (१२५-१३० दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना (११० सेंटीमीटर) किस्म की प्रजाति है जो सिंचित पारितंत्र के लिए उपयुक्त है। इसे मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा ओडिशा के सिंचित क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमश २०१२ में विमोचित एवं २०१४ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा एवं मोटा है तथा औसत उत्पादकता ५.० - ५.५ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस, गला प्रध्वंस, आच्छद विगलन तथा धान टुंग्रो रोग के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान ३०० (सीआर २३०१-५): यह मध्यम विलंब अवधि में (१० दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना (११०-११५ सेंटीमीटर) किस्म की प्रजाति है। इसे औडिशा, बिहार, गुजरात तथा महारष्ट्र के सिंचित/उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः २०११ में विमोचित एवं २०१४ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है और औसत उत्पादकता ५.० - ५.५ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म पत्ता मोड़क तथा राइस व्होर्ल मैगट प्रतिरोधी है तथा सफेदपीठवाला पौध माहू, गाल मिज, राइस हिस्पा, थ्रिप्स, तना छेदक, पत्ता एवं गला प्रध्वंस, आच्छद विगलन तथा धान टुंग्रो रोग के प्रति मध्यम रूप से सहिष्णु है।

सुधरित ललाट (सीआरएमएएस-२६२१-७-१): इस मध्यम अवधि की (१३० दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना धान किस्म को ओडिशा के जीवाणुज पत्ता अंगमारी प्रवण क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१२ में तथा २०१३ में विमोचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं अच्छी गुणवत्ता का है। इसकी औसत उत्पादकता ४.५ - ५.० टन प्रति हैक्टर है। जीवाणुज पत्ता अंगमारी के विरुद्ध प्रतिरोधिता के कारण अधिक उपज देने वाली लोकप्रिय किस्म ललाट के स्थान पर इसकी खेती की जा सकती है। यह किस्म गाल मिज प्रतिरोधी है तथा तना छेदक, पत्ता प्रध्वंस, धनू टुंग्रो वायरस तथा आच्छद विगलन के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

अर्ध गहरा/जल भराव पारिस्थितिकी

(सीआर धान ५०३) जयंती धान (सीआर २२८२-१-२-५-१): यह विलंब अवधि में पकने वाली (१६० दिन) किस्म है जिसे ओडिशा के गहरा जल क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०११ एवं २०१२ में विमोचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ४.६ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म पीला तना छेदक, पत्ता मोड़क, व्होर्ल मैगट एवं थ्रीप्स के प्रति मध्यम रूप से सहिष्णु है तथा पत्ता प्रध्वंस, गला प्रध्वंस, आच्छद अंगमारी, आच्छद विगलन एवं धान टुंग्रो रोग के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। यह किस्म एस मीटर तक जल भराव स्थिति को सहन कर सकता है।

सीआर धान ५०० (सीआर २२८५-६-६-३१): यह विलंब अवधि में (१६० दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई की किस्म है जिसे ओडिशा तथा उत्तर प्रदेश के गहरा जल क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१० में विमोचित एवं २०१२ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ३.३ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म थ्रीप्स एवं पत्ता मोड़क प्रतिरोधी है, पत्ता प्रध्वंस, गला प्रध्वंस, गालमिज तथा पीला तना छेदक के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

वर्षाधान (सीआरएलसी ८९९): यह विलंब अवधि में (१६० दिन) पकने वाली, लंबी ऊंचाई की (१५० सेंटीमीटर), न गिरने वाली एवं प्रकाशसंवेदनशील लोकप्रिय धान किस्म है। इसका पुआल सख्त है। इसे ओडिशा, पश्चिम बंगाल तथा असम के निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २००५ में विमोचित एवं २००६ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा मोटा है एवं औसत उपज क्षमता ४.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म गला प्रध्वंस, जीवाणुज पत्ता अंगमारी, आच्छद विगलन तथा सफेदपीठ वाला पौघ माहू के प्रति सहिष्णु है। यह किस्म ७५ सेंटीमीटर तक दीर्घकालिक जल भराव स्थिति को सहन कर सकता है।

सरला (सीआर २६०-७७): यह विलंब अवधि में (१६० दिन) पकने वाली, अर्ध लंबी ऊंचाई (११०-१२० सेंटीमीटर), न गिरने वाली, प्रकाशसंवेदनशील धान किस्म है जिसे ओडिशा के तटीय/अर्धगहरा क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष २००० में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उपज क्षमता ४.० - ५.० टन प्रति हैक्टर है। बहुत अच्छी गुणवत्ता वाले दाना होने के कारण किसानों के बीच यह बहुत लोकप्रिय है।

स्वर्णा सब-१ (सीआर एसी-२५३९): विलंब अवधि में (१४३ दिन) पकने वाली, अर्ध बौना (१०० सेंटीमीटर) किस्म की इस प्रजाति की ओडिशा के निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष २००९ में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। जलमग्नता सहिष्णुता जीन सब-१ के समावेश के कारण यह किस्म दो सप्ताह तक संपूर्ण जलमग्न स्थिति को सह सकता है। अतः इससे तटीय क्षेत्रों में अचानक आने वाली बाढ़ के कारण जल जमाव की समस्याओं का समाधान हो सकता है। स्वर्णा की तुलना मे इसकी बालियां अधिक उज्जवल हैं, दाना मध्यम पतला है। इसकी औसत उत्पादकता ५.० - ५.५ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म सभी प्रमुख रेगों एवं नाशककीटों के प्रति सहिष्णु है।

पूजा (सीआर-६२९-२५६): यह विलंब अवधि में (१५० दिन) पकने वाली, कम उंचाई (९०-९५ सेंटीमीटर) वाली धान की किस्म है। इसे औडिशा, पश्चिम बंगाल, असम तथा मध्य प्रदेश के उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए वर्ष १९९९ में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उत्पादकता ५.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म सभी प्रमुख रोगों एवं नाश्ककीटों के प्रति सहिष्णु है। अधिक आयु वाली पौध की विलंब में रोपाई के लिए यह किस्म उपयुक्त है तथा इसमें २५ सेंटीमीटर तक की जलाक्रांत स्थिति को सहन करने की क्षमता है।

सावित्री/पोनमणि (सीआर १००९) (सीआर २१०-१००९): विलंब अवधि में (१५०-१५५ दिन) पकने वाली, मध्यम उचाई (११०-१२० सेंटीमीटर की इस लोकप्रिय धान किस्म को तमिल नाडु के उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष १९८२ में विमोचित एवं १९८३ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना छोटा एवं मोटा है, कुटाई के एवं खाने पकाने की गुणवत्ता अच्छी है। इडली एवं दोसा जैसे पारंपरिक दक्षिण भारत के पकवान के लिए इसे बहुत पसंद किया जाता है। मेघयुक्त मौसम परिस्थिति के दौरान इसमें फोटो-सिन्थेटिक कार्यक्षमता बहुत अच्छी होती है। इसकी औसत उत्पादकता ५.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म प्रध्वंस तथा आच्छद अंगमारी के प्रति सहिष्णु है।

सुधरित तपस्विनी (सीआरएमएएस-२६२२-७-६): यह मध्यम अवधि की (१३० दिन) पकने वाली, कम ऊंचाई (९० सेंटीमीटर) वाली किस्म है। इसे औडिशा के जीवाणुज पत्ता अंगमारी प्रवण क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१२ में तथा २०१३ में विमोचित किया गया है। चूंकि सुधरित तपस्विनी में जीवाणुज पत्ता अंगमारी के विरूद्ध प्रतिरोधिता क्षमता है, अतः इसकी खेती अधिक उपज देने वाली एवं इस रोग के प्रति ग्राहाशील तपस्विनी किस्म के स्थान पर की जा सकती है।

सीआर धान ८०१ (फाल्गुनी) (सीआरएसी-२२२४-१०४१): यह मध्यम अवधि की (११५-१२० दिन) शीघ्र पकने वाली, अर्ध-बौना डबल हाप्लाएड प्रजाति किस्म है। इसे औडिशा के सिंचित क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१० में विमोचित तथा २०११ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं औसत उत्पादकता ५.० - ६.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस, गाल मिज तथा पत्ता मोड़क प्रतिरोधी है तथा आच्छद विगलन, धानु टुंग्रो वायरस, भूरा धब्बा, आच्छद अंगमारी, पीला तना छेदक भूरा पौध माहू, सफेदपीठ वाला पौध माहू और घास वाली पौध माहू के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

सीआर धान १० (सत्यकृष्णा) (सीआरएसी-२२२१-४३): यह मध्यम अवधि की (१३५ दिन) पकने वाली, अर्ध-बैना (१०५ सेंटीमीटर) डबल हाप्लाएड किस्म है। इसे ओडिशा के सिंचित तथा उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २००८ में विमोचित तथा २०११ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं औसत उत्पादकता ५.० - ६.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म गला प्रध्वंस तथा आच्छद अंगमारी प्रतिरोधी है एवं पीला तना छेदक और गालमिज के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। इस किस्म में कल्लों की संख्या कम होती है इसलिए इसकी रोपाई की सिफारिश कम दूरी (५० पूंजा प्रति वर्गमीटर) पर करने के लिए की गई है।

नवीन (सीआर ७४९-२०-२): यह मध्यम अवधि की शीघ्र पकने (११५-१२० दिन) वाली, सिंचित एवं ऊपरीभूमि पारितंत्र के लिए उपयुक्त, अर्ध-बौना (१०५ सेंटीमीटर) किस्म की प्रजाति है। इसे ओडिशा, पयिश्चम बंगाल, त्रिपुरा तथा आंध्र प्रदेश में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २००५ में विमोचित तथा २००६ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम मोटा है एवं औसत उत्पादकता खरीफ में ४.० - ५.० एवं रबी में ५.० - ६.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म तना छेदक, प्रध्वंस तथा भूरा धब्बा के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है।

शताब्दी (सीआर १४६-७०२७-२२४): यह मध्यम अबधि की शीघ्र पकने (१२० दिन) वाली, सिंचित पारितंत्र के लिए उपयुक्त, अर्ध-बौना किस्म की प्रजाति है। इसे पश्चित बंगाल में खेती के लिए वर्ष २००९ में विमोचित तथा अधिसूचित किया गया है। इसका दाना लंबा पतला है एवं अच्छी गुणवत्ता वाला है एवं औसत उत्पादकता ४.० - ५.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म जीवाणुज पत्ता अंगमारी, आच्छद अंगमारी तथा आच्छद विगलन के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। इसमें व्यापक मौसमी अनुकूलनशीलता है, धान के अनुकूल सभी मौसम में इसकी खेती की जा सकती है। जल्दी परिपक्क क्षमता के कारण, पूर्व मानसून वर्षा से पहले इसकी कटाई संभव है जिसके कारण शुष्क मौसम में खेती के लिए यह सबसे लोकप्रिय किस्म है। स्थानीय बोरो/ शुष्क मौसम किस्में के स्थान पर इसकी खेती की जा सकती है।

क्षितिज (सीआर १५६-५०२१-२०७): यह मध्यम अवधि की शीघ्र पकने (११५-१२० दिन) वाली, अर्ध-बौना (८०-१०० सेंटीमीटर), अधिक उपज देने वाली धान की किस्म है। इसे पश्चिम बंगाल के सिंचित क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष १९८२ में विमोचित तथा १९८४ में अधिसूतिचत किया गया है। इसमें कल्ले अधिक होते हैं, दाना लंबा पतला है एवं औसत उत्पादकता ४.५ - ५.० एवं टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म प्रध्वंस तथा जीवाणुज पत्ता अंगमारी के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है तथा शुष्क मौसम में भी खेती के लिए उपयुक्त है।

बोरो/शुष्क मौसम धान

सीआर धान ६०१ (सीआरजी-११९०-१): इसे शुष्क मौसम में बोरो खेती सके लिए (नवंबर-दिसंबर में नर्सरी बुआई) विमोचित किया गया है। यह किस्म शुष्क मौसम में विलंब अवधि में (१६०-१६५ दिल) पकती है तथा ग्रीष्म मौसम एवं खरीफ में मध्यम अवधि (१२५-१३० दिन) में पकती है। यह अर्ध-बौना (९०-१०० सेंटीमीटर) किस्म की प्रजाति है। इसका पौध गिरता नहीं है। इसे असम, औडिशा एवं पश्चिम बंगाल के बोरो क्षेत्र में खेती के लिए वर्ष २०११ में विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है। यह शीत सहिष्णु है, दाना मध्यम पतला है एवं सफेद रंग का है। बालियां ठोस, लंबी एवं घनी होती हैं और पत्तियां चौड़ी, मोटी एवं सीधी होती हैं। इसकी औसत उत्पादकता ५.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस एवं टुंग्रो वायरस प्रतिरोधी है, भूरा धब्बा, आच्छद विगलन के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है तथा पीला तना छेदक, हरा पौध माहू तथा पत्ता मोड़क के प्रति मध्यम रूप से सहिष्णु है।

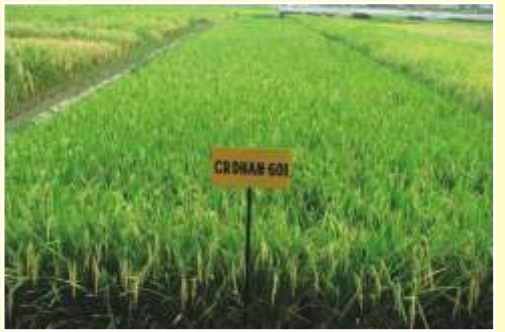

सीआर बोरो धान २ (चंदन) (सीआर ८९८): मध्यम अवधि में (१२५ बदन) पकने वाली, अर्ध-बौना किस्म की इस प्रजाति को औडिशा के बोरो क्षेत्र में खेती के लिए वर्ष २००८ में विमोचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उत्पादकता ५.५ - ६.० टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म भूरा पौध माहू, पीला तना छेदक, प्रध्वंस तथा जीवाणुज पत्ता अंगमारी के प्रति सहिष्णु है।

उथली निचलीभूमि पारिस्थितिकी

सीआर धान ४०१ (रीता)(सीआर ७८०-१९३७-१-३): यह विलंब अवधि में (१४५-१५० दिन) पकने वाली, अर्ध-बौना (११० सेंटीमीटर) किस्म की प्रजाति है। इसे औडिशा पश्चिम बंगाल, तामिल नाडु तथा आंध्र प्रदेश के उथली निचलीभूमि क्षेत्रों में खेती के लिए क्रमशः वर्ष २०१० में विमोचित एवं २०११ में अधिसूचित किया गया है। इसका दाना मध्यम पतला है एवं औसत उत्पादकता ५.०५ टन प्रति हैक्टर है। यह किस्म पत्ता प्रध्वंस, गला प्रध्वंस, आच्छद विगलन, आच्छद अंगमारी, भूरा धब्बा, तना छेदक तथा पत्ता मोड़क के प्रति सहिष्णु है। लगभग एक सप्ताह तक जलनिमग्नता सहन कर सकता है।